Volume-1, Issue-3, June 2025

ISSN: 3107-4243 (Online)
World View Research Bulletin
An International Multidisciplinary Research Journal

स्वदेशी और राष्ट्र सेवा

भगवत सिंह पटेल, वाणिज्य विभाग,
शासकीय नेहरु स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देवरी, सागर (म.प्र.)

सारांश:–

स्वदेशी हमारे स्वतंत्रता संघर्ष की वह सोच है जिसने लोगों को अपने देश, अपनी मिट्टी और अपने श्रम से जुड़ने की प्रेरणा दी। यह केवल विदेशी वस्तुओं के विरोध का आंदोलन नहीं था, अपितु देश की अर्थव्यवस्था, समाज और आत्मसम्मान को मजबूती देने का एक बड़ा प्रयास भी था। यह शोध पत्र स्वदेशी आंदोलन के इतिहास, उसके प्रभाव, गांधी की सोच में उसकी जगह और आज के भारत में उसकी उपयोगिता को सरल शब्दों में समझाने का प्रयास करता है। अध्ययन विश्वसनीय पुस्तकों, शोध लेखों और उपलब्ध प्रतिवेदनों पर आधारित है। इसका उद्देश्य यह बताना है कि स्वदेशी कैसे राष्ट्र सेवा का मजबूत साधन बना और आज भी क्यों जरूरी है।

शब्दकुंजी: – *स्वदेशी, राष्ट्र सेवा, आत्मनिर्भरता, बंगाल विभाजन, महात्मा गांधी, आत्मनिर्भर भारत, वोकल फॉर लोकल*

प्रस्तावना:–

स्वदेशी शब्द संस्कृत के "स्व" यानी अपना और "देश" यानी भूमि से निर्मित होने के कारण अपनेपन, जिम्मेदारी और स्थानीयता की भावना से जुड़ा हुआ है। लेकिन स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में स्वदेशी का अर्थ केवल देश के भीतर बनी वस्तुओं तक सीमित नहीं था। यह जीवन के उस व्यापक दृष्टिकोण को व्यक्त करता था, जो व्यक्ति को अपनी परंपराओं, सांस्कृतिक मूल्यों और स्थानीय उत्पादन से जोड़कर सामूहिक उत्थान की ओर प्रेरित करता था। गांधीजी ने स्वदेशी को लोक–सेवा का ऐसा मार्ग माना था जो व्यक्ति को अपने आसपास के लोगों की जरूरतों को समझने और उनके श्रम को सम्मान देने की सीख देता है। उनका विश्वास था कि जब कोई व्यक्ति स्थानीय रूप से निर्मित वस्तुओं को अपनाता है तब वह केवल एक वस्तु नहीं खरीदता, बल्कि किसी किसान, बुनकर, कारीगर और छोटे उद्यमी के जीवन में आशा का संचार करता है। इसी सहयोग से राष्ट्र की आत्मा मजबूत होती है और आर्थिक स्वतंत्रता का रास्ता प्रशस्त होता है।

स्वदेशी आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम का वह अध्याय है जिसमें आर्थिक प्रतिरोध, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक जागरण एक साथ दिखाई देते हैं। यह आंदोलन केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तक सीमित नहीं था, बल्कि एक ऐसी जागरूकता का रूप था जो देश के लोगों में आत्मसम्मान, स्वावलंबन और राष्ट्रीय दायित्व की भावना जगाता था।

इस शोध का उद्देश्य स्वदेशी के ऐतिहासिक विकास, राष्ट्र निर्माण में इसकी भूमिका और वर्तमान समय में इसकी बढ़ती प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है। स्वदेशी मूल रूप से आर्थिक मजबूती, सामाजिक समानता और सांस्कृतिक आत्मगौरव का वह समन्वित विचार है जिसे अपनाकर व्यक्ति और राष्ट्र दोनों सशक्त बनते हैं।

स्वदेशी आंदोलन की पृष्ठभूमि:–

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान स्वदेशी की शुरुआत 1905 में उस समय हुई जब ब्रिटिश सरकार ने बंगाल को दो हिस्सों में बाँटने का निर्णय लिया। 20 जुलाई 1905 को लॉर्ड कर्जन द्वारा घोषित यह विभाजन केवल प्रशासनिक सुविधा का मामला नहीं था अपितु बंगाल की बढ़ती राष्ट्रीय चेतना को कमजोर करने का प्रयास था। इस कदम के भीतर फूट डालो और शासन करो की नीति स्पष्ट झलकती थी, क्योंकि उद्देश्य हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच अविश्वास बढ़ाना और एकता को तोड़ना था।
इस अन्यायपूर्ण निर्णय के विरोध में 7 अगस्त 1905 को कलकत्ता के टाउन हॉल में एक विशाल सभा हुई। यहीं पहली बार स्वदेशी आंदोलन ने संगठित रूप लिया। लोगों ने न केवल मैनचेस्टर के कपड़ों का त्याग करने का संकल्प लिया बल्कि विदेशी वस्तुओं का व्यापक बहिष्कार करने का निर्णय भी किया। विभाजन लागू होने के दिन, 16 अक्टूबर 1905 को, बंगाल की जनता **"वंदे मातरम"** के स्वर के साथ सड़कों पर उतरी। इस दिन को बाद में स्वदेशी दिवस के रूप में याद किया जाने लगा।
देशभक्त नेताओं विशेष रूप से बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल, लाला लाजपत राय और अरविंद घोष ने इस आंदोलन को एक विशाल जन–शक्ति में बदल दिया। लाल–बाल–पाल की त्रिमूर्ति ने स्वदेशी और स्वराज की भावना को पूरे देश में फैला दिया। मेलों, प्रदर्शनों और नई संस्थाओं के माध्यम से लोगों को यह भरोसा दिलाया गया कि भारत अपना उत्पादन स्वयं कर सकता है और आत्मनिर्भरता कोई दूर की कल्पना नहीं है।
इस आंदोलन की नींव तीन विचारों पर टिकी थी विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, स्थानीय उत्पादों को अपनाना और भारतीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा की स्थापना। विदेशी कपड़ों को सार्वजनिक रूप से जलाना, खादी और अन्य घरेलू वस्तुओं का उपयोग बढ़ाना तथा देशी उद्योगों को प्रोत्साहित करना उस

समय के प्रमुख प्रयास थे। परिणामस्वरूप 1905 से 1908 के बीच ब्रिटिश कपास के आयात में लगभग एक–चौथाई की कमी दर्ज की गई जो स्वदेशी की बढ़ती प्रभावशीलता को स्पष्ट दिखाती है।

इस आंदोलन ने लोगों को यह समझाया कि विदेशी वस्तुओं का त्याग केवल आर्थिक प्रश्न नहीं बल्कि राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा का मार्ग है। स्वदेशी ने सामान्य नागरिकों को स्वतंत्रता संघर्ष का सक्रिय भागीदार बनाया और यह एहसास कराया कि परिवर्तन तभी संभव है जब हर व्यक्ति अपनी भूमिका निभाए।

राष्ट्र सेवा में स्वदेशी का योगदान:–

स्वदेशी का मूल अर्थ राष्ट्र–सेवा और आत्मनिर्भरता की भावना से जुड़ा है और इस आंदोलन ने भारतीय समाज को आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक स्तरों पर गहराई से प्रभावित किया। स्थानीय उद्योगों को पुनर्जीवित कर चरखा, खादी, हस्तशिल्प और छोटे उद्यमों को नई ऊर्जा मिली जिससे परिणामस्वरूप लाखों लोगों को आजीविका प्राप्त हुई और स्वदेशी बैंक तथा कई औद्योगिक संस्थान स्थापित हुए। इस आंदोलन ने समाज के हर वर्ग किसान, मजदूर, व्यापारी, विद्यार्थी और विशेष रूप से महिलाओं को एकजुट किया जिन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी को अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी काल में राष्ट्रीय शिक्षा का उदय हुआ, जिसका उद्देश्य भारतीय मूल्यों, मातृभाषा और व्यावहारिक कौशल पर आधारित नई शिक्षा व्यवस्था विकसित करना था, जिसे सतीश चंद्र मुखर्जी और रवींद्रनाथ टैगोर जैसे व्यक्तित्वों ने मजबूत आधार दिया। सांस्कृतिक पुनर्जागरण भी इस आंदोलन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू था जहाँ तिलक के सार्वजनिक उत्सव, भारतीय कला, साहित्य, संगीत और वंदे मातरम जैसे प्रतीकों ने लोगों में सांस्कृतिक गर्व और राष्ट्रीय चेतना को और प्रबल बनाया। इन सभी प्रभावों ने स्वदेशी को केवल आर्थिक नीति नहीं अपितु राष्ट्रीय एकता, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की दिशा में एक व्यापक जन–आंदोलन के रूप में स्थापित किया।

महात्मा गांधी और स्वदेशी दर्शन:–

महात्मा गांधी ने स्वदेशी को राष्ट्रसेवा का सर्वोच्च मार्ग माना और 1909 की **हिंद स्वराज में स्पष्ट लिखा कि सच्चा स्वराज तभी संभव है जब राष्ट्र आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बने।** इसी सोच के आधार पर उन्होंने चरखा और खादी को स्वदेशी का जीवंत प्रतीक बनाया, क्योंकि उनके अनुसार चरखा केवल सूत कातने का उपकरण नहीं, बल्कि श्रम–सम्मान, स्वावलंबन और सामाजिक बराबरी का संदेश है। 1918 में शुरू हुए खादी आंदोलन ने साबरमती आश्रम से गति पकड़ी और गांधीजी ने इसे राष्ट्रीय वस्त्र का दर्जा देते हुए कांग्रेस कार्यकर्ताओं के लिए अनिवार्य भी किया। उनका विश्वास था कि चरखा करोड़ों भारतीयों की आजीविका का आधार बन सकता है। गांधीजी का स्वदेशी दर्शन केवल

खादी–चरखा तक नहीं रुका उन्होंने ग्रामोद्योगों को पुनर्जीवित करने, कारीगरी, मिट्टी के बर्तन, हस्तशिल्प और अन्य कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने पर बल दिया क्योंकि उनके अनुसार भारत की वास्तविक शक्ति गाँवों में निहित है। ग्राम स्वराज की अवधारणा इसी विचार से उत्पन्न हुई, जिसमें प्रत्येक गाँव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करने में सक्षम हो। असहयोग आंदोलन (1920–21) में खादी ने व्यापक जनजागरण पैदा किया, और 1930 के नमक सत्याग्रह ने स्वदेशी नमक उत्पादन को एक राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में स्थापित किया। गांधीजी के शब्दों में, "स्वदेशी आत्मा का धर्म है," और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार केवल आर्थिक निर्णय नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता की दिशा में नैतिक प्रतिज्ञा था। उनके विचारों ने यह सशक्त संदेश दिया कि आर्थिक स्वतंत्रता के बिना राजनीतिक आजादी अधूरी रहती है।

आधुनिक भारत में स्वदेशी की प्रासंगिकताः–

21वीं सदी में वैश्वीकरण की तीव्र गति, तकनीकी बदलावों और अंतरराष्ट्रीय बाजारों की परस्पर निर्भरता के बावजूद स्वदेशी की अवधारणा आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी स्वतंत्रता संघर्ष के समय थी बल्कि बदलते आर्थिक परिदृश्य ने इसे और अधिक आवश्यक बना दिया है। आधुनिक समय में स्वदेशी संकीर्ण सोच का प्रतीक नहीं अपितु एक ऐसा व्यवहारिक दृष्टिकोण है जो स्थानीय प्रतिभा, संसाधनों, उद्योगों और नवाचार को मजबूत बनाकर देश को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने का मार्ग दिखाता है। कोविड–19 के काल के दौरान जब पूरी दुनिया अस्थिरता और संसाधनों की कमी से जूझ रही थी तब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 12 मई 2020 को घोषित आत्मनिर्भर भारत अभियान ने भारत को आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने की दिशा में नया आयाम प्रदान किया। भारत की GDP का लगभग दस प्रतिशत अर्थात् 20 लाख करोड़ रुपये के विशेष पैकेज ने MSME, कृषि, ग्रामीण उद्योग, प्रवासी श्रमिकों, स्वास्थ्य क्षेत्र और उत्पादन इकाइयों को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी संदर्भ में उभरा वोकल फॉर लोकल का नारा जिसने भारतीयों को न केवल स्थानीय वस्तुओं को अपनाने के लिए प्रेरित किया, बल्कि उन्हें वैश्विक बाजार में ब्रांड के रूप में स्थापित करने का मार्ग भी प्रशस्त किया। हस्तशिल्प, कृषि उत्पाद, पारंपरिक उद्योग, छोटे व्यापार और स्टार्ट–अप्स की पुनर्बहाली और विस्तार इसी सोच का परिणाम है। इसके साथ ही 2014 में शुरू किया गया मेक इन इंडिया अभियान आज भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है रक्षा उत्पादन से लेकर मोबाइल निर्माण और फार्मा क्षेत्र तक भारत निरंतर नए आयाम छू रहा है और इसी कारण वह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल निर्माता बन चुका है। महामारी के समय जब अन्य देश वैक्सीन और चिकित्सा सामग्री के लिए संघर्ष कर रहे थे, तब भारत ने PPE किट, मास्क, दवाइयों और विशेष रूप से कोवैक्सिन एवं कोविशील्ड जैसी वैक्सीनों का स्वदेशी उत्पादन कर न केवल अपनी

आवश्यकताओं की पूर्ति की बल्कि 150 से अधिक देशों को सहायता भेजकर विश्व की फार्मेसी के रूप में अपनी प्रतिष्ठा और मजबूत की। यह पूरा अनुभव इस बात का प्रमाण है कि आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक नीति नहीं, बल्कि संकट के समय राष्ट्र की वास्तविक शक्ति बन जाती है। आज भारत स्वदेशी को एक आधुनिक, व्यापक और वैश्विक दृष्टिकोण के साथ अपनाता है जहाँ स्थानीय विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा एक–दूसरे के पूरक बनते हुए देश को नए अवसरों, नवाचारों और आर्थिक स्थिरता की दिशा में आगे बढ़ा रहे हैं।

निष्कर्ष:–

स्वदेशी केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आंदोलन नहीं था बल्कि यह आत्मनिर्भरता, सामाजिक एकता और राष्ट्र सेवा की वह व्यापक नीति थी जिसने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को नई दिशा दी। 1905 के बंगाल विभाजन से प्रारंभ हुए स्वदेशी आंदोलन ने आर्थिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का मार्ग प्रशस्त किया और बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, बिपिन चंद्र पाल जैसे नेताओं के नेतृत्व में यह पूरे देश का जन–आंदोलन बन गया। महात्मा गांधी ने चरखा, खादी और ग्रामोद्योगों को स्वदेशी का केंद्र बनाकर इसे स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा बना दिया। आज 21वीं सदी में जब भारत वैश्विक मंच पर एक मजबूत राष्ट्र के रूप में उभर रहा है तब स्वदेशी का महत्व और भी बढ़ गया है। आत्मनिर्भर भारत अभियान, वोकल फॉर लोकल और मेक इन इंडिया जैसी पहलें स्वदेशी की उसी विचारधारा को आधुनिक रूप देती हैं जो स्थानीय उत्पादन, उद्यमिता, नवाचार और राष्ट्रीय गर्व को बढ़ावा देती हैं। यदि हम स्थानीय उद्योगों को सहयोग दें, अपने संसाधनों का सम्मान करें, संस्कृति के प्रति गर्व रखते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उन्नति के लिए कार्य करें, तो यही सच्चे अर्थों में राष्ट्र सेवा होगी। गांधीजी का विचारकृकि हर व्यक्ति अपने श्रम, कौशल और व्यवहार से देश के लिए योगदान दे आज भी उतना ही प्रासंगिक है। इसलिए कहा जा सकता है कि स्वदेशी केवल अतीत की अवधारणा नहीं, बल्कि एक सतत राष्ट्रीय प्रक्रिया है जो हमें आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी और सशक्त भारत की ओर ले जाती है।

संदर्भ:–

1. गांधी, एम. के. (1938). हिंद स्वराज या भारतीय स्वराज. नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
2. नेहरू, जवाहरलाल (1946). भारत एक खोज. पेंगुइन इंडिया।
3. भारत सरकार (2020). आत्मनिर्भर भारत अभियान रिपोर्ट. नीति आयोग।
4. दृष्टि आईएएस. "स्वदेशी व बहिष्कार आंदोलन". https://www.drishtiias.com/
5. तिलक, बाल गंगाधर. स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है (भाषण संकलन)।